Dr.Raman Kumar Thakur

Asstt.Prof.(Guest)Department of Economics, D.B.College, jaynagar.Class:-B.A.part-1(Hons.)Paper-2nd Date:-07-08-2020.

Lecture n.-07.

Topic:- भारत में हरित क्रांति एवं नवीन कृषि नीति(Green Revolution and New Agricultural polieyism India)

:- कृषि क्षेत्र में उत्पादकता में क्रांतिकारी परिवर्तन के उद्देश्य से अपनाए गए कार्यक्रम को हरित क्रांति का नाम दिया गया । इस प्रकार हरित क्रांति का संबंध कृषि क्षेत्र में उत्पादन तकनीक के सुधार एवं कृषि उत्पादकता में वृद्धि करने से हैं। नॉर्मन बोरलॉग को हरित क्रांति का जनक माना जाता है। भारत में इसका श्रेय डॉ. एम. एस. स्वामीनाथन को जाता है।

*** हरित क्रांति के मुख्य तत्व(Main Elements of Green Revolution):- हरित क्रांति के मुख्य तत्व निम्नलिखित है:-1) अधिक उपज देने वाली फसलों का प्रयोग ।2)रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग।3)बहु फसली कार्यक्रम- गेहूं के साथ सरसों एवं राई। गेहूं के साथ जौ तथा चना। ज्वार के साथ उड़द एवं जूट। 4) लघु सिंचाई योजनाएं .**

5)आधुनिक कृषि उपकरणों का प्रयोग .

6)पौध संरक्षण.

7)कृषि साख की उपलब्धता .

8)भंडारण एवं विपणन।

9) परिवहन सुविधा एवं ग्रामीण विद्युतीकरण.

10)भू- संरक्षण कार्यक्रम .

11) कृषकों को न्यूनतम मूल्य की गारंटी .

12)कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विस्तार.

* हरित क्रांति के लाभ(Advantage of Green Revolution)

हरित क्रांति के मुख्य लाभ निम्नलिखित हैं:-

1) हरित क्रांति से गेहूं, बाजरा, चावल, मक्का तथा ज्वार की उत्पत्ति में आशातीत वृद्धि हुई है।

2)भारत में हरित क्रांति से मुख्य लाभ यह हुआ है कि देश की जनता को यह विश्वास हो गया कि कृषि के उत्पादन में वृद्धि की जा सकती है।

3) खदानों की भांति कपास ,पटसन तथा तिलहन की उपज बढ़ाने के लिए सरकार का प्रयास निरंतर बना रहा।

4) देश आत्मनिर्भर बन गया ।5)किसानों को पर्याप्त लाभ हुआ । क्योंकि उन्नत बीजों के प्रयोग से कृषि उत्पादन में वृद्धि हुई ।

6)खाद एवं उर्वरक के उपयोग से देश में नए-नए उर्वरक उद्योगों की स्थापना हुई।

7) कृषि निर्भर-उद्योगों को देश से ही कच्चा माल प्राप्त होने लगा।

* हरित क्रांति की असफलताएं(Unsuccessful ness of Green Revolution):-

1) गेहूं की फसल तक ही सीमित।

2) असंतुलित कृषि विकास।

3) सिंचित भूमि तक ही केंद्रित।

4) बड़े किसानों को लाभ।

5) कृषि मजदूरों की बेरोजगारी में वृद्धि।

6) जोतों का निरंतर उप विभाजन एवं अपखंडन के कारण भारतीय संदर्भ में अव्यवहारिक।

7) आय की असमानताओ में वृद्धि।

* नई राष्ट्रीय कृषि नीति(New National Agricultural Policies):- केंद्र सरकार ने नई राष्ट्रीय कृषि नीति की घोषणा

28 जुलाई 2000 को संसद में की थी। बहुप्रतीक्षित कृषि नीति में सरकार ने आगामी 2 दशकों के लिए कृषि क्षेत्र में प्रतिवर्ष 4% की वृद्धि का लक्ष्य रखा है। इस लक्ष्य को सन 2005 तक प्राप्त करने की बात नीति के मसौदे में कही गई है। विश्व व्यापार संगठन के नियमों के चलते कृषि क्षेत्र के समक्ष उत्पन्न चुनौतियों को ध्यान में रखकर तैयार की गई है। इस कृषि नीति का उद्देश्य घरेलू मांग को पूरा करते हुए कृषि उत्पादों के निर्यात में अग्रणी बनाना है। इस कृषि नीति में यह घोषणा की गई है कि ठेका खेती द्वारा निजी क्षेत्र का सहयोग लिया जाएगा। सभी किसानों एवं फसलों के लिए राष्ट्रीय कृषि बीमा योजना चालू की जाएगी तथा देश भर में कृषि वस्तुओं की गतिविधि पर लगाई गई पाबंदियों को समाप्त किया जाएगा। नई कृषि नीति का वर्णन 'इंद्रधनुषी क्रांति' के रूप में ही किया गया है । जिससे सभी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से देश के कृषि क्षेत्र में विभिन्न क्रांतियों जैसे- हरित, खाद्यान्न उत्पादन, स्वेत(दुग्ध उत्पादन) पीली(तिलहनों) नीली (मछली उत्पादन में) लाल (मांस उत्पादन तथा टमाटर उत्पादन में) सुनहरी (फलों के उत्पादन में) गुलाबी (उर्वरक उत्पादन में) रजत (अंडे तथा मुर्गी पालन) इसी को 'इंद्रधनुषी क्रांति' कहा गया हैं!

भारतीय कृषि एवं किसानों को विनाश से बचाने के लिए निम्नलिखित कदम उठाए गए हैं :-1) किसानों को मिलने वाली सब्सिडी में कोई कमी न की जाए .

2) कृषि उपज के लिए लाभकारी मूल्य सुनिश्चित हो.3) रसायनिक खादों के स्थान पर जैविक खादों का प्रयोग किया जाए .4) कृषि क्षेत्र तथा घरेलू खपत के लिए उत्पादित कृषि को विश्व व्यापार संगठन के प्रतिबंधों से दूर रखा जाए।

5) बहुराष्ट्रीय कंपनियों को पट्टे पर कृषि योग्य भूमि लेने से रोका जाए.